

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

वेत्रधनिवत्सारगामियनिरावनामनकूसरमडकसंरुशि
यजाश्यनवयनिरात्रिःसाययनियुषिगःसुप्रजवधिसगर
लेखयुद्धं ॥ २ ॥ मरुतागरेनवि॥ निमीनादिचक्र
स्वष्टिदत्रमभानृहं सत्यगनकादिष्टतन्नादव्यूरीशमामियुगः
लिगाधगमिनिनननिलसूगोयमङ्गावनव्यूरी॥ कृगडंतमा

श्रीगणेशाय नमः
AC 4470/1/2/3

2873

मिदवीश्रीवकुविनाशिरुवद्वजनखंससहानदवीश्रीदि
 यातयसुगालिकामययश्रीदगमुविमुद्वसमुलनिखयमि
 ॥ ॥ वमूदवैत्रसालदववधसैचकुःयादसदवसंरा
 गचकुंरद्वाविमगदवकुसवसदासुखचकुंकाववययश्री
 दवकुनाथं ॥ ॥ ददतिजिनविद्यागिरुयानरादनिःश

वगनगधननादवययीश्रीथादिदभनुमिमुगषयजनि
 किनहानदायनिविनम्ववीय ॥ दयनयमि विम्वजव
 कचधायमजुदिनिसिसमवगवजदवीश्रीसैकुसैमायकुं
 शयायसत्रनाः इगगिनाभनमाक्रयुता ॥ ३ ॥ ॥ शना
 गगधारेववी ॥ ॥ गमूददहनयचरहानखवययदयवामयनसय

॥ गमूददहन ॥

वसावियजिया ॥ ६ ॥ ॥ शुक्रदवीवविनायाकिशुवनवीचार
 विवमत्रायकसमयाज्ञानन्द ॥ ॥ विवमविलखनसदजा
 आनन्दश्चकवकसत्रावरुहदयाज्ञानन्द ॥ ॥ यचवृद्ध
 यचस्कन्धसावयश्चदवाअसूचनचयुमदिगहदया ॥
 ॥ उम्भूहं दीखखधनकविकश्चमचुद्यंमृत्मानिविवस

साज्ञानन्द ॥ ४ ॥ ॥ राजागकध्वदी ॥ खटकागिनी
 किशुवनवायिगाश्चिद्युमात्रदृष्टदयवितामनि ॥ ६
 ॥ नमासीश्चदवीशीवडवावादिस्माद्विसिद्धिद्ययानिऊगाग
 जननि ॥ ॥ पूर्वदलदिगागत्रकवर्धुगिनिश्चूमानका
 गिनीदविनित्रवर्धु ॥ ॥ वायूवासादिनीदवीगिगत

खटकागिनी

॥१४॥

ह्रीं हारयश्चि मसं चाविनी लोत्रव ह्रीं ददा ॥ ॥ नमो ह
सगुणिनिदत्रिगव ह्रीं हारदकि (क्षत्र) ध्रुकादवीधूमव
ह्रीं गी ॥ ॥ चतुःशुक्रानकाननाय चरु म्प्राह्वना रेख
खविडरुवनववसं दिगाम्बवा ॥ ५ ॥ ॥ नमो
नवी ॥ ॐ आ ह्रीं ह्रुं अंगमखा दामनु उचात्रनत्रश्य जायू जिय

यद्यः अरुवंत लखन्ययत्रिलव ॥ ६ ॥ श्वखः स्वादिश्व
लियलात्रः यद्यः आठय शविद्युत्र श्वयक्ष मयत्र सविल
यक्ष हानसर्वत्रिल ॥ ॥ सर्वश्रद्धाक्ष मनुयुतयिः
आवा मां जयस्मान् शदा कदा किनिद्रूं अरु सममानूं
द्ववत्रिगल उव ॥ ॥ दानयमि सर्वकाक्ष लया सर्वसि

मयः गन्धावसंयुक्तं संखल्विगतयच यियुषं रङ्गं कात्रमकुप
 ध्वावावन्धवजसंखलायिग विद्याककत्रसं॥ ॥ द्यतमखतत्र
 मयव्यखव आकृष्टः मृदा किनी जमल्यं रसमिडिसंक्षत्रन
 दवगाचकु हानसखमानिक विड किन्ननं॥ ॥ याश्चादि आ
 चमनः दानयूनसवनः समयचक्रयुहा शिक विमत्रकत्रसंरस

हावागदयमुयवाविचिकत्रयसमयलं हानचक्रनकीरतं॥ ७
 ॥ ॥ **रवागनात** ॥ चक्रवर्धु विजावनमुद विः अष्टागदम
 मुजयुदनेत्रे किन्नन॥ ६ ॥ मुक्तदवीवाग्मिसहासामकिदवीर
 जगत्तुमादिप्रमयनदं सुजाहू॥ ॥ आगमयदयनानेवः
 वान्यश्चागधर्मदिक्कागुचूडयदश्व॥ ॥ यचवर्धुखत्रलूय

॥ १४५६७८९१॥

[illegible][illegible]

हूं हूं हूं ॥ ॥ जिलवर्धुचतुवकपविमखविनर्तुः यत्र स सा अ
 नन्दमन्त्रतिथत्रारविखवजः अर्द्धचतुजडासकूटकावीः हा
 दग्राह्यमसुम्भारिगा ॥ ॥ वज्रचतुर्गाजचर्मउमन्त्रस्वलागा
 विमसातन्यमन्त्रवत्रारकवार्तिकपात्रयत्रमुयाभाविमन्त्रव
 क्कमिन्त्रवत्राः वाद्युचर्मकविशायिगा ॥ ॥ दिव्यमन्त्र

गंकाकायादिऊमदाकिनीदवीः सहजाग्रतनुमन्त्रमि
 त्ताश्चनमाभिश्चोचकसंस्तवाः सगगुन्गुचत्रतजावाधिसा ॥
 ॥ ॥ वा मन्त्रमहति ॥ हाउग्राह्यनः टीयायिदसाचवा
 धववीकवावीलित्ररसाश्चुक्कवात्रंगः सधियासुम्भानः
 सकूटकभादिमन्त्रवा ॥ ॥ कु ॥ ललललसावः सन्त्रवत्राया

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

समस्तगुदविभाजकात्रहसविनादिनिःखडवात्रादिः
दामादियाभादमात्रा ॥ ॥ सावित्रायनःवचससुसयन
कय्यरुवयिगवात्राशगगानिनावधुःवद्विचरुदाःमा
समुलरुवविना ॥ ॥ त्रियधस्त्रुवडकः ॥ ॥ दिग्यजसम
लःवायिसयिसून्यरुवकात्राशहसविनादिनीमत्रा

दिगुक्तविनदस्त्रनिजुन्धना ॥ ॥ साडात्राविना
वजःवडकालियाडलःसगगुवचनआत्राधशसयाजा
नदुःहविमत्रासधुचसात्रमत्रवडवात्रादि ॥ ॥
॥ ॥ **रागकर्तव्य** ॥ ॥ विदंदात्राययिआगिनीधदकव
विददसलकालिसद्यनककैवियात्र ॥ ॥ साडागिनीरु

॥ ४ ॥ १ ॥

अथ निमित्तं हि गंगा न

संहाय्यगम ननु कुरु विना ॥ १४ ॥ ॥ **तथा गंगा नदी** ॥
अथ निमित्तं हि गंगा नदी नित्यं समदक्ष शक्य कुरु विनय नरि
स्वसवदना ॥ कु ॥ गंगा नदी नदी नदी नदी नदी नदी नदी नदी
अथ नकुपय नदी ॥ गानि विविधं नदी नदी नदी नदी नदी नदी
श्याम ख गंगा नदी नदी नदी नदी नदी नदी ॥ दयिद्वय नदी नदी

अथ गंगा नदी

कुच उमा नदी नदी नदी नदी नदी नदी ॥ ॥
विविधं नदी नदी नदी नदी नदी नदी नदी नदी नदी नदी
नदी नदी नदी नदी नदी नदी नदी नदी नदी नदी ॥ ॥
नदी नदी नदी नदी नदी नदी नदी नदी नदी नदी
नदी नदी नदी नदी नदी नदी नदी नदी नदी नदी

रसाद्यव आरुन न विरु खितः सख न द्यं मृड ला नः वि नि किं न
 तितयति नि नि नितयना ॥ ॥ कन हि मय नः गी व नू न
 नन न सिन सा ला श क र वि ख ला ला व न स क न क म ॥
 मि न स मि वृ नः क अ ल र न श क सु नि क य न ना स व ल
 स ख सा वि ॥ ॥ र न यि स न न व डः वा य वि द स र श

व ड द वी य म द गी द नू न या या ॥ १३ ॥ ॥ र व
 मा द ॥ अ अ नि धि दि न वा म ज न र व गी कि न धः मा ल सं ग
 सा र मा म स ख मा द व दि य या साः वि नु व न या या अ च र वि
 न ॥ ॥ कु ॥ न मा मि धी च ल स द न र व नाः ज न म कुः र य द
 दि ना र वि ख ना थ वि ख या वि नः वि नं वि कु स द का वृ ना य

१ अ अ नि नि दि न वा म

॥
॥
॥
॥
॥

॥ रमागम उ ग्री ॥ चकीक वल
न गी वनू द न न व मिल सा आ र मि र व की च की म
वि मः ग म म क ना दि व वृ त्रि य या म ॥ ५ ॥ ए रु ड शि र द न न
मा न का ना या श क ना थ श्री म न न ना वा ॥ ॥ व ड क म म
क हा थ व त्रि याः कं लु कि या उ व र्वा म र सं व नु डा गि नी

क म न वि हा सि ग न म हा स व म मी यु सा द ॥ ॥ व ड वा म
दि आ त्रि ग न ना च यि व रु वि द न रं म र वा रु त्रि का लि त्र यी या रु
दं गि र नू डाः अ र्क रु व रु ल न यु सा द ॥ ॥ स र ड सं वृ त्रि य या
मा अ गि क लू पा न श्री द न व र न त उ म म
दं गि र नू डाः वि वा स यि स न्य क नू म ॥ ॥

॥ वैसुमिपिथस्त्रयः दृष्टिं विवस्वतिश्चतुर्वक्त्रयदका
नीचविर्गः ददिसंयुक्तयुक्तालिरिक्ता ॥ ॥ यद्वा संपूर्ण
आलिकालिः यदा का नो अगि सुदना रक्षा ददा दवी गुकल
वाः नमामि श्रीचक्रसंस्वनाया ॥ ॥ सगगुचचनः सिन
नमश्चात्रः एतयगिताः श्रीकृ. लि. लि. सा रदा भयति य सन
न

॥ ८ ॥

द्वयः सुदमहलज्जाधिगा ॥ ॥ ॥ रत्नागानिद ॥
अखरा निबंजन अद्वय अनूय अगगगक मल ऊ आयी
गा रयु नगा विना सिनः नाभिय चिया ददनेः यान विंद ससक
दिगा ॥ ॥ नमामि निनालकः निलकलखलात दगुरुन
नसं द्यादिगा रसनद्वंद समयः रऊयु का सिनः ऊ व ऊ च उ

[illegible]

ऊकात्रचक्रशीचक्रसंख्यनः अनन्तकाटि सिद्धियालं
गगाश्रीद्वयतादियानेः पूर्वगिनिजावधुत्रयुमुमहा
मुखजानह्ना ॥ २२ ॥ ॥ **स्वागनाग** ॥ सकत्रऊग
गगुत्रः सम्वनविचारानूयनकवनकत्रितसूखवि
॥ के ॥ सम्वनसम्वनकत्रमादिनाखंरविद्विषिक

विनासननून ॥ ॥ दवीवात्रादिपुक्तामादिनदस्रहवर
यद्वनविआवविमखा ॥ ॥ सकत्रविघ्नहनिमगिनित्र
लाश्रत्रगिपतिमगतिः वागिननूखा ॥ ॥ लावालावकनादतिवी
कचिस्त्राश्रनूयमः सूखत्रनिमर्गसूचिका ॥ २३ ॥ ॥
स्वागनाग ॥ कउननूययाकसूत्रकवननूयवृद्धंरश्रव

सकत्रऊ

अने ॥

यानि वं ऊन समया लविरुधं ॥ कृ ॥ नाचयि अत्र धूडा का
नकमान्य श्रव ल्वांगु मवृगी वानय सिवमात्रा ॥ ॥ अं
कूलस्य निवं ऊनः अंकु वस्य विदना श्र अनेरु वधय सवया ल
विमुद्ध ॥ ॥ कंकु वा वद पुवज कंकु वा वलिना श्र अत्र वृत्त
का कूमति सहसा वडा ॥ ॥ रुवहं रुवहं दस रुवव सरुद्धे

लानि शुवन नाथय कूः सत्ववत्राया ॥ २४ ॥ ॥ रुवव व
वी ॥ गऊ किन डदक दाल्य धरियाः कसव कू विठाः अंया वान
श्रु मवृक वरि कूं थव गिवाः वामस्व ल्वांग कया वधया ॥
कृ ॥ श्री १ सत्ववत्राया वाष्टु विगु न्ना ऊंगु लिना श्र माचयि
वचाय यियावः मायाः सा ल्वा रुय म्द लिना ॥ ॥ याम

अ
त्रि
न
८॥

वृक्षमदः वामलाथधविद्या उ नमः सिवमा नार निवदवि
तयादिगकनेकारुवः च उ म स्व अ ति विक वा न अ ध वा

॥ ॥ आलिखय आरु यिव व चा य शि या नः का प्रिया शि वि
स्व मा नू या र वि ख कू लि सः अर्ध च द्य ऊ टा रु कः व्या द्यु च मा
स्व उ म द ॥ ॥ ॥ हि सं वि रं वि व ख ल ना य कः शि नि च

महावीरं विचारक नू न गृ ग्म न वि रं वि व ख न यु ऊ यि स
य न सं सा न इ ध वा ॥ २५ ॥ ॥ ॥ रा ग ग म प द वी ॥
वि उ व न कालि ग म नू ति अ नू वा य न य वं गि ॥ ॥ ॥ रा ना य यि
व ऊ स ख य न म ख ल वि न व कि ॥ ॥ ॥ रा मी स द मु कि व न
द म रू क स हा य वं गि ॥ ॥ ॥ व दू वि द नू य स द मु आ वा क न

र व न क र ग ॥

वंकि ॥ १५ ॥ ॥ रागा का मा द न ॥ य क लि त कं का न य

रु व स नू तिः ॥ नू नु नि ना का स त द द श वि ष्व ड खि न क न नः
न ल स कू ट का षा धि यं ॥ क ॥ न मा मि थि च ह्रु वि वः रु व सि
धू व न न न श वि ख ना थः शि शु व न वा यि नाः वं ना सि धू स क
व नं ॥ ॥ अ न न क ज्ञा न रूः श्री रु व न वि वः स द शि शु व न

न श वा स ग ड नि द ह्या स व नः रु व त्रि शा स ख च स न क
नं ॥ ॥ ना ना च ह्रा दा द नो य नः का थि म र व न नु शि व त द द श
र द ह्य क वा नः रु व स व द नाः शि शु व न वा यि नाः च वं द वि वं ॥
॥ वि ना धि य सर्व रु य द न नः व न यि सा चः द श न क मा स र
शू व न न ड क व दी न या दः सर्व सि धि सा क रु व दं ॥ १७ ॥

८॥ विद्वत्पुत्राश्च ॥

॥ **आगमं धारयन्ती** ॥ विद्वत्पुत्राश्च विद्वत्पुत्राश्च विद्वत्पुत्राश्च
शुक्लकृत्तद्वीवज्जिनासिनिःकलाहानचक्र ॥ २५ ॥
पितृयिन्महाप्रसङ्गाद्ददन्तश्चर्मताक्रमागसत्त्वडधः
वनाथं ॥ ॥ वज्रवाजादिशूरिमन्त्रगमनेश्चस्त्वनचवि
रुःकृत्तकियासम्प्रचय ॥ ॥ गुरुपुत्रसदनङ्गितामनश्च

॥ **कृत्तदं न आवाञ्च विना** ॥ २६ ॥ ॥ **आगमं** ॥
॥ सदनङ्गितामनश्च ॥ ॥ सदनङ्गितामनश्च ॥ ॥ सदनङ्गितामनश्च ॥
॥ सदनङ्गितामनश्च ॥ ॥ सदनङ्गितामनश्च ॥ ॥ सदनङ्गितामनश्च ॥
॥ सदनङ्गितामनश्च ॥ ॥ सदनङ्गितामनश्च ॥ ॥ सदनङ्गितामनश्च ॥
॥ सदनङ्गितामनश्च ॥ ॥ सदनङ्गितामनश्च ॥ ॥ सदनङ्गितामनश्च ॥

८॥ विद्वत्पुत्राश्च ॥

द्विप्रसादा ॥ ॥ इर्गतिवाः विः युद्धानामात्रचयकः अनगः
 वृद्धशुक्लसाहिगारशुद्धवायुः अथरेववकागिनीः अनगार
 गादिनक्षत्रयानं ॥ ॥ यूर्वदष्टिनः यष्टिः सडरुनदिगः
 निनयितत्रकदविनवक्ष्मश्रयंचजितः यंचरुनखवया
 वयुदवीचयुनमचूति ॥ ॥ यंचयविः सान्ति यविम

विः अनगमद्विसिद्धिवयसादारहनयिआः ॥ ॥ ॥
 चविगीताः राजनऊनमशुशमादयदा ॥ ॥ ॥
 ॥ **वागगंधाहेववी** ॥ ॥ तिनिलायनः चडवक्तुविदाचारक
 नक्ष्त्रयानिच्छामशुचदाम ॥ ॥ ॥ वादामहामकलीयाहं
 सदिचडमाचारवागध्वस्वमादवन्दिष्टादि ॥ ॥ वायुहो

॥ निनिनायन ॥

चक्षुः उवाच यत्र वज्राश्च विमानाश्च वायुः शब्दः कृतः दिक्छाया

॥ वामदेहि न कश्चिन्मन्त्रवैश्वानराय कुरु न विवज्जानव

आहूतिदिना ॥ ॥ कश्चिन्मन्त्रवैश्वानराय कुरु न विवज्जानव

नद्यन्तविषयसर्वाद्या ॥ ३० ॥ ॥ वज्रमन्त्रस्य ॥

नवजानवः च विमानाश्च विमानाश्च विमानाश्च विमानाश्च

३३ दिगा ४॥

मालाः स्वलां वसंदिगाः लात्रजि कारयं कना ॥ ॥ ॥
दवी प्रक अनेकाः सयत्र विष्वादेया पिना शुरु इव न ह्यसि
लध विद्याः अडा मडा कर्ष्याः मान विद्या ॥ ३३ ॥
रवाग विद्या ॥ उदिगात्र विद्याः युवन वना गा रव वसु ददा
मकका सत्र गा ॥ ॐ ॥ द्या न इ सु व र वानि स गत्र विना

३४ दिगा ४॥

३ अस्वयानि वजन मा कृष्णा ॥ ॥ दिन क व स सु ल
मखा गगा र क वृष्णा म न व सं स व व दृणा ॥ ॥ दग्ध अ
लि रय यानि नि दगा र द व अ व न व मि व न मि ना ॥
गा वानि य व नः य वि गु ष र व गा र व क वा वा दि गुं रु मि य
न मि ना ॥ ३४ ॥ **॥ रवाग र व दी ॥** रा ख न ख गी म र वः

वक्रविरुद्धः धर्मादियाया लेखुमिन्नश्कटागत्रमना हन
मधुवक्रव्याधुदियः कमनवना ॥ ५ ॥ इह एवमुत्र हृदय
कमनद्वियचक्रवश्चाद्विसिद्धिवनविश्वनाविनासनः ह्ययिन्न
महामुद्रासिद्धिव ॥ ॥ आदिवद्धादियसमध्वमधुलविना
सयिस्वनचक्रवश्चानिन्नानिन्नवर्कसुनक्तिमंतीमन्तःमन्त्रायन

यन्निमन् ॥ वायुसात्रिबद्धदिहवृद्धवर्त्यक्षत्रजगताड्यः
वर्षंरसयववृद्धजीनःवृक्षकवयियाःनिर्गुवदहिययानि
लयव ॥ वायुयूउयदडासिभयियगलःताकव्विरुः
विरुंमत्ररसगुव्वववधमिबममधवीयाःरुनायिसून
वृक्षगल्ले ॥ ३५ ॥ वायुगगगगमात्रसि ॥ दि

शुद्धवृत्तकमव्यवकावर्धुश्चमकूटक
 नाहं हं गनाहं हं गनागताहं हं हं हं
 हं ददिनकवर्किश्चउआहं नमस्त्वामिना॥ गमुर्क
 मधुनमास्यः गांदवमनगिद्वउवाहिनसस्वामिना॥
 समगुवचनधमिन्नगतायविद्याद्वउवावादिशुद्धमिल

धवा ॥ ३३ ॥ ॥ नमो नमः ॥ उदया गिनीगठः वंगनी
 कासाश्कलिसकमैलाठकधात्रिगदवीः शुक्लदवीवकसर्वद
 वनादिनः शुक्लदविस्वास्वविद्याधविदवी॥ ॥ मनुय
 पागिगुवनचक्रशुक्लदवीवजः सर्वदवदकः शुक्लदवी
 दिवाकवविद्याधविदवी॥ ॥ उकावसवजसंशकर



नमामि श्रीजागामवल्लभानस्य श्रीशक्तिनिर्गुणद्वीः शिखर
 नययिसा ॥ ॥ यत्वेतत्कृत्ययसि मः दक्षिणदिगद्वीश्व
 किनिदिपिनिचडसिकवाडनी ॥ ॥ यत्तुमात्रादिगर्वैरे
 रुचनतुद्वीशकिनिनाचयिद्वत्तवाया ॥ ॥ दानिद
 नवक्ता ॐ न्यजुस्यगवाशवादगजागिनीसुमवसंल

वा ॥ ३९ ॥ ॥ शत्रागवसंग ॥ मध्विद्विगियत्राश्य
 निकवालाशसकवदवः वाद्यिगयादंग ॥ ॥ मंगीज्जा
 दिवद्वीमंरुक्तावाश्वजूरिद्वंनिपुननिख्यस्वनाः
 ॥ ॥ कंकमत्रचिवाद्युवाचिद्विस्वमाश्वन्यागारिल
 कवृणविद्याना ॥ ॥ विखयविखयः पार्श्वगतनस्यश

॥ ४५ ॥
 ॥ ४६ ॥
 ॥ ४७ ॥

नमो भगवते वासुदेवाय

विष्णुविद्याविमलीयंगुणसुखयंभु ॥ ॥ सतगुणयुक्तमाय
विद्मन्नादिदशमडागिर्वर्गेगीतः युवनकविष्णु ॥ ४० ॥
॥ **॥ राजागरेव वि ॥** नमामि शक्तिनयानुकरं दक
यगुनमन्त्रातिआत्रिगितादयंचरुनयचधगुखनूपा
वृद्धधर्मज्ञानयखरा ॥ ६ ॥ गेनाहं हं गेनाहं हं र

ऊवागसंसात्रडधानीयामनाद्वननमागुनमागुपंचडी
नखत्रादयंचरुनयंचधगुखनूपाः वृद्धधर्मज्ञानयख
रा ॥ ॥ नमामि शशीमानि केयनेलक्ष्मिद्विसिद्धिबल
वायनिशद्विगद्वध्वसर्वयाखयकनूदानयूनयद्रुमा
कयुदा ॥ ॥ नमामि शधर्मिष्ठागुवागिखनखादमइ

श्रीमद्भगवद्गीता ४॥

आययानिमादिनाश्वाद्यन्तान्नमूनंमूनंकात्रागसर्वदत्त
यानिमांस्त्रिणा॥ यानमासिद्वागिल्लनमस्तुल्ययन्
गित्रीनिवासिनाश्वाद्यन्तान्नमूनंमूनंकात्रागसर्वदत्त
मिदिनचक्रल्लना॥ ४१ ॥ श्रीमद्भगवद्गीता ४॥
मंशनाथवयःमहाचितविद्वयाश्चन्द्रहासस्वर्गनाः

जितवचननिष्कृशनेयात्रसकुलमाज्यःमाजिद
नःउरागनाथजूरयदाता॥ ५॥ ॥गिआमनिगारि
अवतात्रयात्रदवःयुनसासिवृगमत्रलाव्यवदवाशसिद्ध
कगिवयूदगयालिकमत्रायःपुवयतिर्वदासमितत्रदद
व॥ ॥त्रागिकमत्रकासितःवाधियानःवामकवधल

हाथशुक्रसुमंत्रंनःत्रागकुककःदाविदइस्वरयदवना
॥ ॥हूँहूँरगावगिकायारुगवतिःनसासिशीयृगमल
दवाशनसासिश्रीनयंददवःस्वर्गमध्ययातात्रदव॥
॥दमगुमिद्धागिगत्रदकनतात्रात्रगगवचनशि
धवाश्रीज्जगारुवसिप्रगतधयियाःशीलाक

प्रतापानि ॥ ४३ ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

गामिनि विनोदो

अमुख्यं शुद्धिमुत्तमं अन्तर्गतं धर्मं अमुखागि खनं ॥ कु
 ॥ नमासि शक्तिनयं च जितनमास्तु रदमस्तु मित्राणि मत्त
 हास्तु स्वमाया ॥ ॥ श्वर्गमध्वयागा नमुत्तमं श्रीकाया न
 कश्चिच्च उनीच जितमहासूतिव ना ॥ ॥ धर्मं श्रीमत्तु

॥ १८३॥

नखत्रिमशतनियामैत्रेद्युताम्यसूत्रासूत्रलूयि॥ ॥ वा
मयुजयूकधनधनशददितनिल्लरवर्जसवधना॥ ॥
श्रीलाकखनमधुलमहासूत्रलायाशनाजाधिनकुशीननलुम
नदवं॥ ॥ श्रीवजावाकवधूदकआवाकशरुतयिवाक
उजिल्लचनविना॥ ४३ ॥ ॥ रमागवनादी॥ ॥

ॐ नमः ॥

गदाथनामसमुल्लेखः काठिसाधः नामादिसा
 काठिसाधनामजागितिः वृन्दयामः वास्तुविः कन्दसा॥
 क ॥ ईकाठसमुल्लेखः सुविनामः जागिति वृन्दयामश्च
 जयगुखचिकलः आलिगनः वास्तुसकलसमाधि॥
 ॥ यूर्वचक्रादिक्रियायः दक्षिणतलविहलियायश्चरिः

यमयुकासः उरुस्वनेधियाय ॥ ॥ संयुक्तकारु
जाशः निमिस्वयं कात्रियायवाक्यिरुसधुलनाडः रुली
यात्रगागधकदय ॥ ॥ नूयसूयगंधर्वनस्ययशः ॐ न
मिप्रधर्मधगस्वविदकधूयासधुचययाः गडो गिवाहन
यजामदायि ॥ ४१ ॥ ॥ श्रानविहारा ॥ ॥ १५५ ॥

卷五十一

[illegible]

25

सिनी॥ ॥ श्री वीशाध त्रिदवीः सूत्रनत्रमादिना रसकल
त्रिद्विसिद्धिदहीममाता ॥ ४८ ॥ ॥ रत्नामतादी ॥ यंचव
यात्रायात्रिममोत्रिः यंचरुतयंचमूडा रत्ना रत्नत्रसित्रमात्रा
यं वास्यराः वास्यवर्मा कलिवेथितऊत्रदा ॥ कु ॥ हूं हूं का
संज्ञा नवर्द्धः स्वर्द्धवर्मा दन नित्रसुमददाः काया दिययीस

व गै कत्रलिः कयात्र निभात्यला ॥

॥ वायुचर्मवसुवया

लिहा श्रवध्वमथादत्र सर्वाकाका ॥

॥ चवनसमयधुडी

गतावूनिमाता शरुनायि अमावडगीनचयिता ॥ ५० ॥

॥ **रागा रास** ॥ विदकमत्रः वनकासुमसुत्रंलाः सधूकाल

हवूडा विता शशी विन्याः कपुखगीसहदवीः सधुननयोवधु

व्यापिता ॥ ५१ ॥ नसामिः नेनात्माः प्रियुवनमाताः वाहूनि

दविशीमर्गर्थविशस्यत्रसूत्रासुत्रवद्विग्यत्रनः अन्तवाविद्वि

सिद्धिवत्रयसादा ॥ ॥ नंदनवः अमिवचंदननन्याः अ

भवाकसुमः याविजातवनश्रुत्यगंगम असमवागमटिनि

अः अनगतिथिः कपुवन ॥ ॥ अष्टरुवः अष्टकमिली

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

अष्टादशवर्षासूत्रं कथयामास अष्टमहासूत्रं नितान्तिवान्
निःशून्याविद्युनिवावती ॥ ॥ विस्वाविद्यायिगमावती
दवीः अस्वयनिलंजनः कानि सयं अहं स्य कः सुखरुल
दायनिदवीः कलमजनलपुरुषाय सवनागानि ॥ ५१ ॥
॥ श्यागं गृज्जामवसत ॥ जिनवनजननिःपुलाख

वलसतं शिविनासयि ससवसं ददा आलिगाम ॥ ध्रु ॥ नि
नसहस्रवयः गृज्जामवसं येष शगन्ध आत्रिगत आनंदवय
न ॥ ॥ वायसलगासमयवधियमयन्य श्याग विवाग
इयिमास्यः निखना ॥ ॥ अवज्जुत्रिसंजागः विमुख
असूननयसस्वसं ददा आलिगाम ॥ ॥ ददददिद

अनासिक ॥

गुवनः श्रीजागमस्वराश्रयनसामिहानखविआलिगमम
॥ ५२ ॥ ॥ **नागकोसिकवसंत** ॥ अतसिकसुमय
निदहयुगस्वराश्रविविदिननसमिमकृतविशुद्धिमा
॥ ६ ॥ नाचयीनः श्रीअचनविवाश्रकनाचोआनन्दविवा
सयिअचन ॥ ॥ **आमडरुयः** विशुद्धादमनाश्रयह

अनासिक ॥

आलिगमः अद्ययमहासुद ॥ ॥ **विवागचधुरुवरुय**
कवाश्रकस्यानिदिनः स्वगीगर्कुनियाम ॥ ॥ **मात्रचतुद**
यनीखिवविष्णुदगाश्रवविमसिर्यगनाथः गगनविवासि
नि ॥ ५३ ॥ ॥ **नागरुववी** ॥ अस्तकृपयात्रदिगांदि
गुवनः धासिनमात्रचतुलनागमश्रगगधसस्वनः गगनः

नमूनंका नाः गगन उल्लवृत्त यद्विंशति ॥ कुं ॥
नमा मियंच जाकिनीः यंचैरुगमिः हानवा किनी भवत्यं
हं रुगमां ॥ ॥ पूर्व उल्लवृत्त यद्विंशतिः दक्षिण
विद्युत्सर्वं दिया प्रददा किनी दियि निवृत्त सिक वाजः व्याज
प्रवृत्त संश सवदती ॥ ॥ सिद्धि निव्या दिति रुक्म

प्रेमवृत्त

उल्ला किनी स्वत्वा गवत्र मुः अं क स ह सं श्व वृत्त जा किनीः
व्यावृत्त तात्र जा किनीः च व्यावृत्त दा किनी च पुत्र दती ॥
॥ किनी वृत्त न मिद वी जा किनी उरु वाय सत्र हः यंच स्रडा आरु
त्रहा विरु खि ता श्व गी रट कः वृत्त यं थ स्वत्वा ताः या ग यत्र
वात्रिः हान दती ॥ ५४ ॥

प्रेमवृत्त ॥ पूर्व वृत्त यनी

समावृत्तकनकवर्नशुद्धगुणगुणविशेषः ॥ नमो देव्या नमः
स्ववादानः चंद्रधरत्रिगुणमयत्रयधामि ॥ ॐ ॥ ॐ ॐ ॐ
सममानः नित्रवात्रसदिर्गः शुद्धरौवगद्यगिसादिर्गं २ शुद्धः
साद्विजमन्ननमाद्युदाताः समन्नकपायययदन्नं ॥
यष्टिमंष्ट्रायनिः दक्षिवादानः कंकमवर्णगन्नविजयद

लाशदक्षितवाहीनाः चतुर्धा नवयिनि शुद्धसमदिगमदिषा
सर्ग ॥ ॥ ॐ ॥ नवमि कादवीधुमवर्णकालिमददव
गात्रः दववृत्तदिर्गं २ शुग्निदिष्टकसात्रिः मयववादानः त्रक
वाकसवर्नमाकिदक्ष ॥ ॥ नमो देव्या नमः
स्यामवर्णगजचक्रसदिर्गं २ वायव्य

नाः सिंहवाहनः खर्गध्वजः॥

नियः रुद्रगुणः दिगः ऊर्ध्वः

रुद्रगुणः निरुद्रगुणः निरुद्रगुणः

धनाः सिंहः सर्वाकारानाम्

हवतः रुद्रगुणः मद्यः

॥४॥

साया जात्र ४॥

उत्तिग वृत्तक खल गी वन उन्नन सित्र सात्रा ॥ ॥ स
वैत थग गजन तिः विव दित राव अ ला वा र्शी वज का गि नीः
वन्न सित्र गतः गा न नि स म न सं व ज्ञा ॥ ५३ ॥ ॥ र वा म
द मा व ॥ सा या ज्ञा ल वि स्य सा धृ स त्रि ज्ञा र मा द सा या उ व द्यु दि
या न सा या मा हा ॥ ॥ ॥ र्य सं सा न अ म नः ना रा द्दु ख मा द द्यु दि

वैज क गि नी ४॥

ला या न नित्र आ सा ॥ ॥ अ न मी ख न च धृ द्द क र सि त्ता र व
म म न वि ख दा ग यूर् द्द क ॥ ॥ स द ज ल्प ल न य उ न द्मा
ग ग ध त्रि या र यं स्र य न मः सा र्ग स न न ल ॥ ॥ अ न धू व
उ द य ष न्द या य य मा दा र ग ड ति नि द वीः र व क ना वा वा ॥
५१ ॥ ॥ र वा म नृ र्ग म सा न सिं ॥ व द्द क गि तिः द न्द

गाय २ शिषुवननाथददा मयान ॥ कु ॥ यित्तयित्रमहा
 सुषलकसकलियिया २ व ऊद वीरुत्रयियाः अनूरुत्रका
 न ॥ ॥ उर्द्धनात्रिगिदत्रकमत्रसंजाह २ ददीम जादसा
 यवनसहदनि ॥ ॥ रुऊयित्रयंयमहासुख २ यंच सि
 वमः विर्जवावृण ॥ ॥ हगगुवूयसादः चगुथासिन्नक

श्याहासयित्रः संसात्रमसुडा ॥ ५६ ॥ ॥ राजात्रका
 ॥ ॥ हूँ हूँ कात्रस जागः ॐ दू निलसमइ तिदहा २ यकालक
 वनसमकवनकावाक वासमाकवा ॥ कु ॥ ऊसंरुअवत्रअ
 नगमत्र निभ्व गैयामकवसा लि २ ऊगगनाथक गगयात्रिग
 मदाकावुवाया ॥ ॥ अत्र निनिविप्रदिगवासजात्रकया

२५ कात्र
 से जाग ८॥

[illegible]

॥ वृक्षद्विहवः सद्यसासनं दय्यदवनसूचिवाशदया

निषिगदिगायत्रस।य।कित्रविद्युदगा॥ ॥ विविदित्रला

हवनमुद्दिताः दिवात्रहस्यसोमिश्कगगवाष्टिगसर्वसंपद

सिद्धिवन्तु दायकं कहु ॥ १२ माया कहु दीपाजी

देवक नैत्रा सादवीः शिशुवननाथं शयचर। दिनव्यापिनाः
यचवर्धददा॥ ॐ ॥ नमामि शशीयूष्मावाचैत्य शदनूकः
शीरुक्षस्व त्रिःवज्रक। गिनीसूतका॥ ॥ यवदिवाहिलि
गरुथिप्रः निमवर्ध्ना शदक्षित्यायावत्तम विगम विन्दुधना
॥ ॥ यस्मै लिखो लिखो विद्मामिनी देवी रमा आति लिखाव

यचवर्द्धददा॥ ६३ ॥ तसा मिश्री ययाय ॥

[illegible]

मरुथिजः निजवर्ष्कश्रद्धितायाश्च विद्यायै

॥ यस्मै लिख्यो लिख्यो विष्णुमित्रोऽयम् ॥

...जागनादवोरगाडातिलिजाव

ॐ स्वस्ति नमो ॥

五

51
24

七

॥ १८ ॥

ऊर्द्धकाय ॥ ३० ॥

॥ राग मलाद ॥ योगन कानराव आन

शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः

लोकेश्वर प्रियुषतनाथ रक्तनामयङ्गागम उद्धारलिया ॥

हृदि हवः ॐ आदि गायत्र्या नारायणं नमस्कृत्य नमः

॥ गुक्तसूतनक्षत्राय ह नमः श्रद्धाविदा विदु इत्यहं ल

४॥

॥ सुखावतिरुवमः धर्मसन्त्यशलाकखनः जल

ऊलमत्रह ॥ ३१ ॥

॥ रत्नाकरात्मकः ॥ वासवः ॥

धनः दहिने कवलि श्यायन उदल्लङ्घनानु सिता ॥ ५ ॥

देवीताचयिप्रकङ्कितिवक्त्यामितीशितिनित्यद्वयी

शिवनयसिखां

॥ कावत्त्य इयिः यागलवद्धि

नः स्ति तिलाखनः कसूय यियवंदश्च समदेहा श्यपुत्रवदन

कूवजयदवनं गुं: यमनखयुका सिता ॥ ध्रु ॥ नसा मिश्री
महा मंश्री सकन गुण जाय: सूर्य गुनूरुक्रम गिदहन लूनव
वयुयं: सर्व लूनानि द्विपारंगता ॥ ॥ यथनकनय
वज्रय धूमधनं: सदा आ विंगना वाडिता रदिगिय कूमाय
न: गिगियन: लूनखल्व: चतुथखनी सर्ववयववा ॥

८॥ विष्णु ८॥

मरुय युज या मयुव न धर्म चायः चरु धर्म वा मधु कय रू
क रत्न तस कूटः युक्त विना कि वी न्व द्यु म ध्रु ग ग न्द्र विवरा
॥ ॥ ति वृद्धि वृद्धि सा यि न्द्र म न रा म न राः सर्व क रू न
वियः सा ग न्द्र श्य न्द्र मा न न्द्र वजः क ल न्द्र वृद्ध स न्द्र स न्द्र
गति ॥ ३३ ॥ ॥ रत्न ग न्द्र लिता ॥ विस्वय विस्वय वि

नूय व न स का म क न्द्र यि वं डा वि नि ता रि क म न्द्र श द द यि डि
न वि न्द्र मा सिः स द यि स न्द्र ग वजः ति नि आ रा स वि स्था म स य न्द्र
॥ ॥ कु ॥ न सी मं क द्या र्वः का न्द्र वृद्धः द वज सं स न्द्र वि स्त्र न्द्र यं
य यि य द्म स सं का रा स क व नि स य न्द्रः स द्द्र क आ न न्द्र म य रू न न्द्र
यं ॥ ॥ व द्द्र य क का स न्द्र क म न्द्र न न्द्र ना म सं गी ति अ

द्वायश्चान्द्रजगता इत्येतासतः वा विद्वन्वायकः कर्माधर्म
 मान्वावविष्मा ॥ गुणवत्कृद्विषयिणा जूषयवत
 क्विषियमनिमकृद्विषयिणाश्च उचक्रया
 गुहः त्रितयनमस्वतः सूर्यगुवने स्वववात्रादगुवम
 ॥ ॥ स्वप्नमायासंयुतः सावयविशावतावृद्धधर्म

संयसत्रनागारियाश्च गुणवत्तनसिधधत्रियाः मडागि
 सत्रगवजः कृतकर्ममान्वावृद्धसत्रनं ॥ ३४ ॥
 ॥ रत्नागत्रित ॥ अत्रयंचनगीमंशकूमात्राश्च मधव
 कित्रनसंकासनददा ॥ ॥ ॥ दत्तगीमंशद्यास्वतगु
 वनव्यापिताश्च नीलस्वगीवत्तददिनकत्रधमि ॥

॥ अत्रयंचन ॥ ४ ॥

२६ निमेष म॥

वामयस्तु कथं गुणनायाश्च यथागतं न का तन द
हा ॥ ॥ दाहिन वाम कथं धनं गुणनायाश्च यथागतं न का तन द
यं न वाम यथादा ॥ ॥ ऊर्गाननया न नाथ यथादिगद
दयाश्च अस्मिन्कसुखं वल यथादा ॥ ३५ ॥
॥ **रामा लक्ष्म** ॥ कृति सयमः रुतः किन धातु विजः निम्

यमः धर्म धातु यथाश्च कृतः यथा किन धातु र्कं धा
सर्ववृद्धाय यथादं ॥ ॥ नाना मासीष्टी मन्त्रिद्यतः धर्म धा
तु व्यापिनाश्च अनेगदेवास्तु सविता ॥ ॥ ऊर्गाननया न नाथ यथादिगद
तः प्रितुवन कथं यथादिगद यथादिगद यथादिगद यथादिगद
मन्त्रिद्यतः सविता नाना मासीष्टी मन्त्रिद्यतः सविता ॥ ॥

विष्णुकाव्य १॥

ना॥ ॥रुनयिशी सिद्धिवज्र गी गच लिगाश्च नमः सवन
माकुरु नयसाया ॥ ३७ ॥ ॥रजागमलादा वंका
संजागः बलिगासनखाश्च नमः कवर्क प्रवच कथ्य ठनुजा॥
॥नमामीजन निदेवी श्रीवसुधात्राश्च नमः कठ
नारुधैत्रर विगा॥ ॥वामभु रद पठ केन मर्तु

अग्नि निवच २॥

त्रियाश्चु ह्यायन मिदरु क क्षालिगा॥ ॥नानाचा विना
यदा विदह वनाश्चिन्म्वज्र गचला दिद हिममा गा॥
३८ ॥ ॥रजागकासाद॥ अग्नि निवच कुरु विवहा
नः मय सासन शक्ति कसुद दंश्चोदरुयानकः पिथ स्वतः
असुम्भान मदा का पुत्राया॥ ॥हं हं कात्र पच दं गा

आदिनिमार्गिकाह्वयं ॥ ॥ मात्रियामाननद्रुख्य

॥ सा विद्या सा न न दृष्टु रय

हृत्तंशविष्णुविनासनरुचिद्रव्यमात्रतं॥ ॥सगगुल

॥सगमुल

वचनसिखगद्वित्रियाश्चवनसलनशीहचवंग ॥ १० ॥

॥ रत्नामालेन वीर्यं नृपसमस्तान्यः सिद्धसर्वदाः वाञ्छुस्ते ॥

संन्यगमः सान्यः सिद्धसर्वकाः वाशुखा

नामा वा किमस्य शयदनमस्तानः अस्वकवृकाः युतिकमा

द्याः तद्वक्तृनाम् ॥ ५ ॥ ॐ ह्यजमजकुरुगवद्विः वायूनाद
सादिगवीदिगवलिदकिंश्रजसमसानः ॥ ६ ॥ विमविमल्लवना

सादिगवीदिगवलिदकिंश्रुश्रुसमसानःश्रुपिसाविश्रुश्रुवना

वसिष्ठसहजानंद ॥ ॥ कंकत्रिद्यानावाहिसभयाः कानाकृता

॥ कं क निद्या न व लि ग भ द्याः का ना कू ना

ककठकनागमश्कनकंरुनवायरुनमद्याःसत्रसिद्धनागमःचूग

कचुक्षाश ॥ अष्टदहाताः संश्रयाननागमः यन्त्येचमद्या

॥ अष्टकं साक्षाः संश्रया न नागमः यत्तु च मद्या

यमसादिचूदाश्च श्रीयात्रनाम कत्रऊत्रवृद्धाः चूनिगम्य
 घामदायमा ॥ ॥ यात्रमूमा नः यककिवृद्धाः अूनंन
 नागः यत्रंलुलसद्याश। की। वि। की। नी। ला। वा। अरु। न। वृद्धाः कृत्री
 कनागमयस्वनयथात्रा ॥ ॥ द्वादशगुजा द्वादशरुवना
 यवृवृमवदनाः द्वादशानयमशरुनयिकर्नयात्रास्वकंस

वताः कात्री। जातित्रियचाययिवदना ॥ ११ ॥ ॥ द्वाद
 गजं अलि ॥ वृमागमिचन्द्रकालिशिखनयिगात्रकं म
 वायनं ॥ ॥ ॥ गुर्गं यिलया कं कं कं रुठूकत्रककत्रं ॥ २
 नाता विहात्रचूदमहावचियजा ॥ ॥ ससयात्रकृजा
 गावत्रदवाश्वाकृत्रवाकृत्रचतृसदवयनं ॥ ॥ सितय

११॥ गमवि ॥